ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-I*AUGUST-2013
Periodic Research

स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता से सम्बन्ध का अध्ययन

यशिका गुप्ता
प्राध्यापिका (शिक्षक प्रशिक्षण विभाग)
मुलायम सिंह महाविद्यालय,
कानपुर

पुनीत शर्मा
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र)
सी0 एम0 जे0 यूनिवर्सिटी,
शिलांग

सारांश

आज स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनकी समस्याओं में प्रमुख रूप से मानसिक अस्वस्थता, कुसमायोजन, संवेगात्मक अपरिक्वता, तनाव व कुंठा आदि दिखाई देते है। ये समस्यायें उनके व्यवाहर आचरण व शैक्षिक विकास को प्रभावित करती है जिससे उनका समुचित व्यैक्तिक एवं सामाजिक विकास नहीं हो पाता उनमें समायोजन की समस्या बनी रहती है। अतः शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि स्नातक स्तर पर छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य कितनी मात्रा में सृजनात्मकता से सम्बन्धित है। और उसकी दशा व दिशा क्या है। अतः इसी जिज्ञासा के शमन हेतु शोधार्थी द्वारा कानपुर नगर जनपद के अनुदानित महाविद्यालयों में 480 शिक्षार्थियों का चयन क्षेत्र व लिंग के आधार पर किया गया है। मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु अरूण कुमार सिंह तथा अल्पना सेन गुप्ता द्वारा मानकीकृत परीक्षण तथा सृजनात्मकता के मापन हेतु प्रो0 वॉकर मेंहदी के परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों के विश्लेषण हेतु पियर्सन स्क्वायर सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी जिससे स्पष्ट हुआ कि स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व सृजनात्मकता के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध औसत के करीब होता है। यह भी सिद्ध हुआ कि सृजनात्मकता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच सहसम्बन्ध पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र तथा लिंग का भी प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों की सृजनशीलता उनके मानसिक स्वस्थ से धनात्मक दिशा में औसत रूप से सहसंबंधित होती है।

मुख्य शब्द : मानकीकृत परीक्षण, सृजनात्मक क्षमता

प्रस्तावना

स्नातक स्तर पर शिक्षार्थी आज अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त हैं। उनकी समस्याएं प्रमुख रूप से मानसिक अस्वस्थता, कुसमायोजन, संवेगात्मक अपरिपक्वता, तनाव, कुंठा आदि के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। ये समस्याएँ शिक्षार्थियों के व्यवहार, आचरण और शैक्षिक विकास आदि को प्रभावित करती है, जिससे उनका वैयक्तिक और सामाजिक विकास नहीं हो पाता क्योंकि स्नातक स्तर का शिक्षार्थी प्रौढ़ावस्था की दहलीज पर होता है। उसमें समायोजन की समस्या बनी रहती है। ऐसे में वह अपने संवेगों को उचित अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है जिससे प्रतिकूल परिस्थितियों में निराशा उत्पन्न होती है जो कि व्यवहार में इस प्रकार की असामान्यता को दर्शाती है और उसमें उपस्थित सृजनात्मक क्षमता प्रभावित होती है जिसका लाभ समाज व देश को मिलना चाहिए उसे नहीं मिल पाता है। ऐसे में शोधकर्ता इस स्तर पर यह जानने को जिज्ञासित था कि मानसिक स्वास्थ्य कितनी मात्रा में सृजनात्मकता से सम्बन्धित है और उसकी दशा व दिशा क्या है, इसके लिए विस्तृत साहित्य सर्वेक्षण किया गया जिसमें से मुख्य निम्नवत् हैः–सिद्दीकी एवं डी अर्के (1984) ने कनाडा में अध्ययन से परिणाम प्राप्त किया कि प्रतिबल का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर युवाओं के लिए घातक है। कैम्पस (1986) ने व्यवहार श्रृंखला पर मानसिक स्वास्थ्य विश्लेषण से देखा कि छात्रों की तुलना में छात्रायें अधिक प्रभावित होती है।

कोलमैन ने बताया कि आज की पीढ़ी का युग ही चिन्ता का युग है। मानसिक स्वास्थ्य के सकारात्मक रूप में व्यवहार की परिभाषा का प्रस्ताव पोलार्क (1948), हडफील्ड (1950), हेनरी (1953), फैंक (1953), कोलेजन (1956) तथा बेलिन (1957) ने किया था। इसी तरह के अध्ययन भारत में सृजनात्मकता से सम्बन्धित वाकर (1973), सनसनवाल (1984), मौर्या (2002), सिंह (2004), मौर्या (2004), यादव (2007), मिश्रा (2009), गुप्ता (2011) के थे, जो मानसिक दबाब, चिन्ता तथा व्यक्तित्व से जुड़े थे। शोधकर्ता ने (Gap area) समझकर स्वतंत्रचर के रूप में मानसिक स्वास्थ्य और परतंत्र चर के रूप में सृजनात्मकता

को लिया जो स्नातक स्तर पर कानपुर मण्डल से 480 ि"क्षार्थियों पर क्षेत्र व लिंग को आधार मानते हुए किया गया।

परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

1. स्नातक स्तर पर ि"क्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर ग्रामीण ि"क्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
3. स्नातक स्तर पर शहरी ि"क्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्कता के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
4. स्नातक स्तर पर छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच कोइ सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
5. स्नातक स्तर पर छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

शोध की प्रकृति

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण प्रकृति का है।

शोध का प्रकार

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का है।

शोध–विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया है।

समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि स्नातक प्रथम भाग के समस्त ि"क्षार्थी कानपुर मण्डल से है।

न्यादर्श

यादृच्छिक न्याद"ार्ा प्रविधि से लाटरी रीति द्वारा कुल 480 ि"क्षार्थियों का चयन किया गया, जिसमें आधे–आधे क्षेत्र व लिंग के आधार पर थे।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का संकलन निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों द्वारा किया गया था।

1. मेंटल हेल्थ बैटरी

यह उपकरण अरूण कुमार सिंह तथा अल्पना सेन गुप्ता द्वारा 1983 में मानकीकृत किया गया था। जिसमें कुल छः क्षेत्रों से 130 कथन थे। इसकी वि"वसनीयता गुणांक 0.72 से 0.87 तक थी और वैधता गुणांक 0.6 से 0.8 के बीच थी। व्याख्यात्मक मानक प्रति"ातांक था।

2. बर्बल टेस्ट ऑफ कियेटिव थिंकिग

यह उपकरण 1971 में मानकीकृत हुआ, जिसका निर्माण प्रो0 वॉकर मेंहदी ने किया था। इसके द्वारा प्रवाह, त्वचनीयता तथा मौलिकता का सम्मिलित मापन होता है। इसमें कुल 04 क्रियाविधियॉ हैं, जिसमें प्रथम–द्वितीय तथा तृतीय से तीन–तीन कथन और अन्तिम क्रियाविधि के लिए केवल एक कथन है। इसकी वि"वसनीयता गुणांक 0.959 और वैधता गुणांक 0.39 है। व्याख्यात्मक मानक प्रति"ातांक है।

पयुक्त सांख्यिकीय तकनीकी

आंकड़ों के वि"लेषण हेतु पियर्सन स्क्वायर सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई थी।

शोध की सीमायें

प्रस्तुत अध्ययन कानपुर मण्डल के केवल कानपुर नगर जनपद पर ही किया गया है। इसमें केवल अनुदानित महाविद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध के तकनीकी शब्द

प्रस्तुत अध्ययन में कुल दो तकनीकी शब्द है जिसमें मानसिक स्वास्थ्य को स्वतन्त्र चर के रूप में तथा सृजनात्मकता को आश्रित चर के रूप में प्रयुक्त किया गया था।

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य ऐसे सीखे गये व्यवहार से होता है जो सामाजिक रूप से अनुकूल होते हैं और जो व्यक्ति को अपनी जिंदगी के साथ पर्याप्त रूप से मुकाबला करने की अनुमति देते हैं।

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता वह व्यावहारिक प्रक्रिया है जो व्यवहार में नयापन लिए कुछ नमनीयता तथा मौलिकता की ओर उन्मुख रहती है।

विश्लेषण व व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के वि"लेषण से निम्नलिखित सारणी तैयार हुई हैं –

सारणी

स्नातक स्तर के शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के सम्बन्ध की विश्लेषण तालिका

समूह	स्वतंत्रता का अंश	सह सम्बन्ध गुणांक
सम्पूर्ण ि"क्षार्थी	478	0.58
सम्पूर्ण ग्रामीण ि"क्षार्थी	238	0.52
सम्पूर्ण शहरी ि"क्षार्थी	238	0.59
सम्पूर्ण छात्र	238	0.56
सम्पूर्ण छात्रायें	238	0.53

d.f. (478) at 0.5 Level of confidence = 0.88
df. (238) at 0.5 Level of confidence = .159

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिसका मान 0.58 प्राप्त हुआ। जो df (478) के 0.5 सार्थकता स्तर पर 0.088 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। अतः सिद्ध हो जाता है कि स्नातक स्तर पर ि"क्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध औसत के करीब होता है।

इसी प्रकार ग्रामीण व शहरी ि"क्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सृजनात्मकता के बीच सहसम्बन्ध गुणांक क्रम"ाः 0.52 और 0.59 जो कि df (238) के 0.5 सार्थकता स्तर पर 0.159 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई और सिद्ध हो जाता है कि निवास स्थली का प्रभाव नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार छात्रों और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा सृजनात्मकता के बीच सहसम्बन्ध गुणांक क्रम"ाः 0.56 और 0.53 है जो कि df (238) के 0.5 सार्थकता स्तर पर 0.159 से अधिक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई और सिद्ध हुआ कि लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि स्नातक स्तर पर ि"ाक्षार्थियों की सृजन"ाीलता उनके मानसिक स्वास्थ्य से धनात्मक दि"ाा में औसत रूप से सहसम्बन्धित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आनन्द एस0 पी0 (1988) आर0 सी0 ई0 मेंटल हेल्थ स्केल, इंडियन एजूके"ानल रिव्यू 23 (1) No – 1, P – 41 – 47 NCERT.
2. अग्रवाल एस0 एण्ड कुमारी एस0 (1982) ए कोटिले"ानल स्टडी ऑफ रिस्क टेकिंग एण्ड क्रियेटिविटी विथ स्पेशल रेफ0 टू सेक्स डिफ0, इंडि0 एजू0 रिव्यू 17 (3), 104–109।
3. गुप्ता एस0 पी0 (2011) सांख्यिकीय विधियॉ 7 शारदा प्रका"ान इलाहबाद।
4. मेहदी वकार (1971) बर्बल टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी, ने"ानल साइ0 कार0 आगरा।
5. गुप्ता ए0 सेन एण्ड सिंह ए0 के0 (1985) इमो"ानल स्टोविलिटी टेस्ट फार चिल्ड्रेन (ESTC) ने"ानल साइकोलाजिकल कारपोरे"ान आगरा।
6. सिंह एन0 के0 (2011) शैक्षिक नियोजन मानचित्र मापन, शारदा प्रका"ा इलाहाबाद।